अध्याय
04

इस्लाम का उदय और विस्तार
(लगभग 570 ईसवी से 1200 तक)

सीखने का प्रतिफल-

इस अध्याय में यह समझने का प्रयास करेंगे कि छठी शताब्दी में इस्लाम का उदय किन परिस्थितियों में हुआ। किन परिस्थितियों के कारण इस्लाम एक विश्वस्तरीय धर्म बना। तथा अरब साम्राज्य का विस्तार किस प्रकार हुआ?

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व में इस्लाम धर्म को मानने वाले लोगों की संख्या एक अरब से भी अधिक है। लगभग सभी महाद्वीपों में इस्लाम धर्म को मानने वाले मुसलमान निवास करते हैं। वस्तुतः इस्लाम धर्म बहुत पुराना धर्म नहीं है। इस धर्म की शुरुआत लगभग 1400वर्ष पहले हुआ था। इस्लाम धर्म के पहले भी अन्य धर्म थे। जिसे इस प्रवाह चित्र से समझा जा सकता है।

1. धर्म का क्रमिक विकास
2. सनातन धर्म (1500ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व)
3. बौद्ध एवं जैन धर्म (600 ईसा पूर्व से 400 ईसा पू)
4. ईसाई धर्म (चौथी शताब्दी)
5. इस्लाम धर्म (छठी शताब्दी)

इस्लाम के इतिहास के बारे में जानने के लिए कुछ प्रमुख स्रोतों का अध्ययन किया जाना आवश्यक है। जिसमें इतिवृति अथवा तारीख सबसे महत्वपूर्ण है। इसमें घटनाओं का वर्णन क्रमानुसार दिया जाता है।

इस्लाम के इतिहास लेखन के स्रोतों को निम्न प्रवाह चित्र से समझा जा सकता है

1. स्रोत
2. साहित्यिक स्रोत
3. पुरातात्विक स्रोत
4. इतिवृति
5. यात्रा वृतांत
6. पुस्तकें
7. दस्तावेज
8. कानूनी पुस्तक, साहित्य, कहानी, कविता
9. भवनावशेष
10. मस्जिद
11. स्मारक

© JCERT not to be republished

12. मुद्रा

13 शिलालेख

सही अर्थों में इस्लाम के इतिहास लेखन 19वीं सदी में जर्मनी और नीदरलैंड के विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों द्वारा शुरू किया गया। ईसाई पादरियों ने भी कुछ अच्छी पुस्तकें लिखी। हालांकि उनकी दिलचस्पी मुख्यतः इस्लाम की तुलना ईसाई धर्म से करने में रही।

अरब प्रदेश में इस्लाम का उदय

अरब साम्राज्य के उदय के पूर्व अरब लोग कबीलों में बटे हुए थे। कबीले का नेतृत्व शेखो के द्वारा किया जाता था। प्रत्येक कबीले के अपने देवी देवता थे जो मूर्तियों की पूजा करते थे। अरब लोग खानाबदोश प्रकृति के थे। उनका मुख्य पेशा पशुपालन और व्यापार था । बाद में वे कृषि कार्य से जुड़े। उस समय मक्का व्यापार और धर्म का प्रमुख केंद्र था। काबा यहां का प्रमुख धार्मिक केंद्र था। यहां हज यात्री आया करते थे।

मोहम्मद पैगंबर की जीवनी

- मोहम्मद साहब का जन्म 570 ईस्वी में अरब के मक्का शहर में हुआ था। वे कुरैशी कबीले के थे। जो मक्का का शासक वर्ग था।
- उनके पिता का नाम अब्दुल्ला और माता का नाम अमीना था।
- बचपन में ही माता-पिता की मृत्यु हो गया अतः पालन-पोषण उनके दादा और चाचा ने किया।
- मोहम्मद साहब ने अपने से अधिक उम्र की विधवा महिला खदीजा बेगम से विवाह किया।
- मोहम्मद साहब को 611 ईसवी में मक्का से कुछ दूर हीरा की गुफा में सच्चे ज्ञान की अनुभूति हुई। अल्लाह के दूत जिब्राल द्वारा उन्हें अल्लाह का संदेश मिला।
- 612 इसी में मोहम्मद साहब ने अपने आप को खुदा का रसूल या संदेशवाहक घोषित किया।

1. मोहम्मद साहब की शिक्षाएं
2. एकेश्वरवाद पर बल दिया अर्थात ईश्वर एक है
3. समानता पर बल दिया।
4. मूर्ति पूजा वहुदेववाद तथा आडंबर का विरोध किया।
5. नैतिकता एवं सदाचार का पाठ पढ़ाया।
6. सामाजिक कुरीतियां जैसे बाल विवाह, विधवा, विवाह निषेध पर रोक लगाया।

मोहम्मद साहब और हिजरत

मोहम्मद साहब की शिक्षाओं का अरब वासियों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। अनेक लोग उनके अनुयाई हो गए। लेकिन निजी स्वार्थों के कारण धर्म के ठेकेदारों ने उनकी शिक्षाओं का विरोध किया। विरोध होने के कारण मोहम्मद साहब 622इसी में मक्का से मदीना चले गए। इतिहास में इस घटना को हिजरी या हिजरत कहा जाता है और हिजरी संवत की शुरुआत हुई। यह चंद्र संवत है। यह सौर वर्ष से 11 दिन कम होता है।

मदीना में मोहम्मद साहब ने एक राजनीतिक संगठन की स्थापना की और इस्लाम धर्म का प्रचार करने का प्रयास किया। 629 ईसवी में मोहम्मद साहब मदीना से मक्का लौट गए। उन्होंने मक्का वासियों से एक समझौता किया जिसके अनुसार मक्का को तीर्थ स्थल के रूप में मान्यता दी गई। काबा के काले पत्थर की पूजा की अनुमति दी गई। मक्का

© JCERT not to be republished

वासी इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिए और मुहम्मद साहब एक राजनीतिक धार्मिक नेता बन गए। इस प्रकार अरब प्रदेश के अन्य खानाबदोश कबीलों सरदारों ने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया। मदीना नए इस्लामी राज्य की राजधानी बनी तथा मक्का को एक राजनीतिक धार्मिक पहचान देने के बाद 632 ईसवी में मोहम्मद साहब की मृत्यु हो गई।

नव इस्लामी राज और खिलाफत

मोहम्मद साहब की मृत्यु के बाद इस्लामी राज्य के उत्तराधिकारी की समस्या आ गई। मोहम्मद साहब का कोई पुत्र नहीं था। इसलिए उत्तराधिकारी के प्रश्न पर विवाद उत्पन्न हुआ। इसी क्रम में खिलाफत की स्थापना की गई। शुरू के चार खलीफा को पवित्र खलीफा कहा गया।

1. पवित्र खलीफा
2. प्रथम खलीफा अबू बकर (632 ईसवी से 634 ईसवी)
3. द्वितीय खलीफा उमर (634 ईसवी से 644 ईसवी)मोहम्मद साहब के ससुर। विस्तार वादी नीति अपनाया।
4. तृतीय खलीफा उस्मान (644 ईसवी से 656 ईसवी) सैनिक अभियान के माध्यम से प्रशासनिक तंत्र विकसित किया ईसाइयों और यहूदियों को जिमी का दर्जा दिया।

5 .चतुर्थ खलीफा अली 656 ईसवी से 661 ईसवी मोहम्मद साहब का दामाद। इसके काल में शिया सुन्नी संप्रदाय में मुसलमानों का विभाजन 657 ईसवी में दोनों संप्रदायों के बीच ऊंट की लड़ाई हुई।

उम्मयद खलीफा (661 ईस्वी से 750 ईसवी)

661 ईसवी में सीरिया का गवर्नर मुआविया खलीफा बना और उम्मयद खिलाफत की स्थापना हुई। उसने कर्बला के मैदान में चौथे पवित्र खलीफा के दूसरे पुत्र हुसैन की हत्या करवा दिया। इस घटना की याद में शिया संप्रदाय के लोग मोहर्रम मनाते हैं। मुआविया ने खलीफा पद को वंशानुगत बना दिया। इस के समय में अरब एक साम्राज्य बन गया। दमिश्क साम्राज्य की राजधानी बनी। इस वंश के शासक अब्द- अल- मलिक द्वारा एक पथरीले टिले के ऊपर निर्मित चट्टान का गुंबद डोम ऑफ रॉक बनाया।

अब्बासी क्रांति

दवा नामक आंदोलन द्वारा उम्मैयदो की सत्ता 750 इसवी में समाप्त कर दी गई और अब्बासी खलीफा की स्थापना हुई।अब्बासी सिया समर्थक थे। इस क्रांति में केवल वंश का ही परिवर्तन नहीं हुआ बल्कि इस्लाम के राजनीतिक ढांचे और उसकी संस्कृति में भी बदलाव आए। इसलिए इस घटना कोअब्बासी क्रांति के नाम से जाना जाता है। अब्बासी खलीफा बगदाद को अपनी राजधानी बनाया। अब्बासी का अंतिम प्रभावशाली खलीफा हारून रशीद हुआ। इसके बाद उत्तराधिकारी के लिए गृह युद्ध शुरू हो गया। फल स्वरूप अरब साम्राज्य भी खंडित होने लगा।

10वीं - 11वीं शताब्दियों में तुर्की सल्तनत के उदय से अरबों और ईरानियो के साथ तुर्क मुसलमान ने सल्तनत की स्थापना की ।महमूद गजनबी (998 से 1034) ने खुरासान और अफगानिस्तान में सत्ता स्थापित किया। तेरहवीं शताब्दी तक अरब में तुर्की मुसलमानों का प्रभाव बना रहा।

धर्म युद्ध

1095 इसबी से 1291 ईसवी के मध्य ईसाइयों और मुसलमानों के बीच जेरूसलम पर अधिकार करने के लिए युद्ध हुआ।जिसे

© JCERT not to be republished

इतिहास में "धर्म युद्ध" के नाम से जाना जाता है।

धर्म युद्ध के कारण

1. धर्म युद्ध के कारण
2. जेरूसलम का धार्मिक महत्व मुसलमानों ईसाइयों और यहूदियों का इस स्थल पर दावा।
3. धर्मांतरण का प्रसार। मुस्लिम प्रशासित क्षेत्रों में ईसाइयों को जबरन मुस्लमान बनाया गया।

4 सामाजिक आर्थिक परिवर्तन।

5 व्यापारिक कारण। व्यापार के दौरान संघर्ष।

- 1095 ईसवी से 1291 इसवी तक ईसाइयों और मुसलमानों के बीच मुख्यतः 8 युद्ध हुए।
- प्रथम विश्व युद्ध में ईसाई योद्धाओं ने सीरिया फिलिस्तीन में 4 राज्यों की स्थापना की। जिन्हें सामूहिक रूप से आउट रैमर (समुद्र पार) ये भूमि कहा गया।

धर्म युद्ध के परिणाम

1. धर्म युद्ध के परिणाम
2. धनजन की क्षति
3. धार्मिक विद्वेष बढा
4. मुस्लिम राज्यों में ईसाई प्रजा के प्रति कठोर नीति
5. यूरोप में सामंतवाद का पतन

अरब साम्राज्य की अर्थव्यवस्था

1. अरब साम्राज्य की अर्थव्यवस्था
2. प्रारंभ में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार पशुपालन एवं व्यापार तथा क्षेत्र विस्तार के साथ कृषि का विकास।
3. कृषि भूमि राज्य के नियंत्रण में। भूमि कर के रूप में खराज लिया जाता था
4. इक्ता व्यवस्था का प्रचलन।कर वसूल करने वाले को वेतन के बदले इक्ता नामक भूखंड दिया गया।
5. भूमध्य सागर और हिंद महासागर के माध्यम से व्यापार का विकास तथा लाल सागर और फारस की खाड़ी के माध्यम से व्यापार।
6. स्थल मार्ग से ऊंटों द्वारा वस्तुओं का आयात -निर्यात होता था।
7. कृषि और व्यापार के अतिरिक्त शिल्प और उद्योग का भी महत्वपूर्ण स्थान था।

अरब साम्राज्य की धार्मिक शिक्षा

1. अरब साम्राज्य की धार्मिक शिक्षा

2. मकतब
3. मदरसा
4. प्रारंभिक शिक्षा
5. उच्च शिक्षा
6. इस्लामी कानून
7. दर्शन
8. विज्ञान
9. इतिहास
10. भूगोल

© JCERT not to be republished

अरब वासी विज्ञान के क्षेत्र में भी आगे थे।

1. ज्ञान विज्ञान
2. गणित
3. खगोल विज्ञान
4. भौतिकी
5. रसायन
6. चिकित्सा
7. मानसून

कला एवं स्थापत्य का विकास

1. कला।
2. नृत्य
3. संगीत
4. हस्तकला
5. कुरान की आयतें
6. चित्रकला (अरबस्क शैली)

1. स्थापत्य
2. मस्जिद
3. मदरसा एवं अस्पताल
4. महाल
5. मेहराब
6. मीनार
7. सराय

इस्लामी स्थापत्य कला शहर सोनिक शैली के रूप में विख्यात हुआ।

स्मरणीय तथ्य

- मोहम्मद साहब का जन्म 570 ईसवी में मक्का में हुआ था। मोहम्मद साहब की शादी खदीजा बेगम नामक विधवा धनी व्यापारी से हुआ था।
- इग्नाज गोल्ड जीहर ने जर्मन भाषा में इस्लामी कानून के बारे में पुस्तक लिखी।
- मोहम्मद पैगंबर का अपना कबीला का नाम कुरेशा था।
- गैर मुस्लिमों से लिया जाने वाला कर जजिया कहलाता था।
- पहला उम्मयद खलीफा का नाम मुआविया था।
- उम्मयद शासक अब्द अल मलिक ने जेरूसलम में डोम फ्रॉक रॉक बनवाया।
- बसरा की रहने वाली महिला सूफी रबिया थी।
- मानसून की खोज अरबों ने किया था।

अभ्यास प्रश्न
वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मोहम्मद पैगंबर के प्रतिनिधि क्या कहलाए?

   (क) उमर (ख) खलीफा

   (ग) मुल्लाह (घ) मौलवी

2. इस्लाम की शुरुआत कहां से हुई?

   (क) अरब (ख) इजरायल

   (ग) यूरोप (ग) ऑस्ट्रेलिया

3. मोहम्मद साहब मदीना से मक्का कब लौटे?

© JCERT not to be republished

(क) 632 ईसवी (ख) 622 ईसवी

(ग) 629 ईसवी (घ) 527 इसवी

4. ईरान प्राचीन धर्म है?

(क) इस्लाम (ख) ईसाई

(ग) जरथुस्त्र (घ) यहूदी

5. चौथा खलीफा कौन था?

(क) अबू बकर (ख) अली

(ग) उस्मान (घ) उमर

संक्षेप में उत्तर दें

1. सातवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में वेददुओ के जीवन की क्या विशेषताएं थी?

उत्तर- सातवीं शताब्दी में अरब का समाज अनेक कबीले में विभाजित था। प्रत्येक कबीला का प्रमुख सेख होता था। अरब समाज मूर्ति पूजा और बहुदेववादी प्रथा में विश्वास करता था। बहुत से अरब कबीले खानाबदोश या बद्दू होते थे। भोजन के रूप में मुख्यतः खजूर और अपने ऊटों के लिए चारे की तलाश में रेगिस्तान में विचरण करते थे। कबीलों में राजनीतिक विस्तार तथा सांस्कृतिक समानता लाना आसान नहीं था। कभी वे आपस में अपने वर्चस्व के लिए संघर्ष करते रहते थे।उनके परिवहन का मुख्य साधन ऊंट था। अरबों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र कावा था।

2. अब्बासी क्रांति से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- उमैयद खलीफा के बाद अरब में दवा नामक एक आंदोलन हुआ। जिसमें उमैयद बंश समाप्त हो गया। 750 इसवी में उमा उमैयद वंश का स्थान अब्बासी खलीफा ने ले लिया। अब्बासी मोहम्मद पैगंबर के चाचा के वंशज थे। आवाज सुनी उमेद शासन को बुरा और दुष्ट बताया को उम्मयद वंश को समाप्त कर दिया। इस घटना को ही अब्बासी क्रांति कहते हैं।

3. अरबों की ईरानियों और तुर्को द्वारा स्थापित राज्यों की बहुसंस्कृतियों के उदाहरण दीजिए।

उत्तर- अरबों ईरानियों और तुर्को द्वारा स्थापित राज्यों की बहुसंस्कृतियों के उदाहरण निम्नलिखित हैं।

1. अरब साम्राज्य में मुस्लिम ईसाई तथा युवती संस्कृतियों के लोग रहते थे।
2. ईरानी साम्राज्य में मुस्लिम तथा एशियाई संस्कृतियों का भी विकास हुआ।
3. तुर्की साम्राज्य में मिश्री ईरानी भारतीय तथा सीरियाई संस्कृतियों का भी विकास हुआ।

4. यूरोप और एशिया पर धर्मों का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- यूरोप और एशिया पर धर्मों का निम्नलिखित प्रभाव पड़ा।

1. मुस्लिम राज्यों ने अपनी ईसाई प्रजा के प्रति कठोर नीति अपनायी।
2. पूर्व और पश्चिम के बीच होने वाले व्यापार में इटली का प्रभाव बढ़ता चला गया।
3. धर्म युद्ध के कारण व्यापार के कई नए मार्ग खुल गए।
4. यूरोप के सामंतों की शक्ति कम हो गई और सामंतवाद का अंत हो गया। साथ ही राष्ट्रीय राज्यों का निर्माण शुरू हो गया।

© NCERT not to be republished

5. यूरोप और एशिया पर धर्म उद्योग का क्या प्रभाव पड़ा।

उत्तर– यूरोप और एशिया पर धर्मोंयुद्धों का निम्नलिखित प्रभाव पड़ा।

1. मुस्लिम राज्यों का अपने इसाई परिजनों की ओर कठोर रुख अपनाया गया
2. मुस्लिम सत्ता की बहाली के बाद भी पूरब और पश्चिम के बीच व्यापार में इटली के व्यापारिक समुदायों का अधिक प्रभाव पड़ा।
3. दोनों धर्मों के संस्कृतियों का आदान-प्रदान हुआ तथा दोनों एक दूसरे से बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया।
4. दोनों धर्मों ने एक दूसरे को राजनीतिक धार्मिक और संस्कृतिक रूप से प्रभावित किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1- रोमन साम्राज्य के वास्तुकलात्मक रूपों से इस्लामी वास्तुकलात्मक रूप कैसे भिन्न थे?

उत्तर– प्राचीन काल में रोमन साम्राज्य एक महान साम्राज्य था।रोमन साम्राज्य में सर्वांगीण विकास हुआ था। वास्तु कला के क्षेत्र में भी रोमन साम्राज्य में उत्कृष्टता हासिल की। रोमन साम्राज्य की वास्तुकला की विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

रोमन साम्राज्य की वास्तुकला-वास्तुकला रोमन शासकों के महान कलात्मक प्रेम को प्रदर्शित करती है रोमन वास्तु कलाकारों द्वारा ही सर्वप्रथम कंक्रीट का प्रयोग किया गया था रोमन कलाकारों ने दुनिया को एक और पत्थर के टुकड़ों को मजबूती से जोड़ने की कला का ज्ञान कराया था उन्होंने वास्तुकला निर्माण के क्षेत्र में दोनए प्रयोग किए 1. डाट का प्रयोग 2. गुंबदो का आविष्कार।

डॉट की सहायता से दो तीन मंजिला इमारतें बनाना आसान हो गया था डाटों का इस्तेमाल पुल द्वार और विजय स्मारक के निर्माण में किया जाता था। जैसे रोम के फोरम जूलियस की दुकानें। रोमन फॉर्म के विस्तार के लिए स्तंभों वाला चौक बनाया गया था। इसी प्रकार चित्र नाइंस के पास कुछ टु गार्ड फ्रांस प्रथम शताब्दी ईस्वी के रोम के इंजीनियरों ने तीन महाद्वीपों के पार पानी ले जाने के लिए विशाल जल सेतु का निर्माण किया था।

79 ईसवी में बना कोलोसियम जहां तलवारबाज जंगली जानवरों का मुकाबला करते थे। यहां एक साथ 60000 दर्शक बैठ सकते थे। कोलोसियम एक प्रकार का गोलाकार थिएटर की आकृति का था। जहां रोमवासी पशुओं तथा दासों के बीच होने वाली लड़ाईओ को बैठ कर देखते थे। "थिएन"एक गोल गुंबद था। इसकी ऊंचाई और चौड़ाई लगभग 142 फीट थी। इसका निर्माण रोम सम्राट एड्रियन द्वारा कराया गया था। रोमन इंजीनियरों द्वारा बनाए गए पुल और सड़कें आज भी विद्यमान हैं।

रोमन साम्राज्य के बाद एशिया में अरब साम्राज्य का विकास हुआ। यहां इस्लामी संस्कृति का विकास हुआ। इस्लामी संस्कृति ने भी वास्तुकला के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया।

मुस्लिम वास्तुकला निर्माताओं ने मेहराब, गुंबद का निर्माण करने की कला रोमन वासियों से सीखा था। उन्होंने अनेक उत्कृष्ट मस्जिदों और इबादतगाहों, मकबरो, मेहराबों तथा मदरसों का निर्माण किया था।

इस्लामी साम्राज्य में अनेक धार्मिक इमारतें इस्लामी जगत की पहचान बनी। मध्य एशिया से लेकर स्पेन तक जितने भी मस्जिदें, मदरसे और मकबरे बने उन सभी का प्रारूप एक जैसा था। मीनार बनाने में उनकी दक्षता बहुत

© JCERT not to be republished

अधिक थी। मस्जिद बनाने की कला ने एक विशेष वास्तुशिल्पीय रूप प्राप्त कर लिया था। मस्जिद खंभों के सहारे वाली छत को आधार लेकर बनाया जाता था। प्रत्येक मस्जिद में एक खुला प्रांगण होता था। जहां जलाशय फव्वारा का निर्माण किया जाता था। प्रांगण एक बड़े कक्ष की ओर खुलता था। जिसकी दो विशेषताएं थी।

1. दीवार में एक मेहराब होती थी।
2. एक मंच होता था जिसका प्रयोग शुक्रवार को दोपहर की नमाज के समय प्रवचन करने के लिए किया जाता था।

मीनार नए धर्म के अस्तित्व का प्रतीक था। अब्बासी काल में प्रसिद्ध मस्जिद "अलमुतव्वकील" का निर्माण कराया गया था।

प्रश्न 2-

1. बद्दू कौन थे?
2. अब्बासी क्रांति क्या है?
3. खलीफा किसे कहा गया?
4. यूरोप और एशिया पर धर्मयुद्ध क क्या प्रभाव पड़ा?

अभ्यास प्रश्न

1. मोहम्मद साहब की जीवनी लिखें।
2. धर्म युद्ध के कारणों को लिखे?
3. पवित्र खलीफा के बारे में लिखें।
4. इस्लामी अर्थव्यवस्था का वर्णन करें।

© JCERT not to be republished